International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253x, (Print), E-ISSN 2320-544x, Issue-3, Vol-I, March-2013

शोध पत्र- हिन्दी

हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य चेतना

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्यता हिन्दी, शा. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी, म.प्र.

हरिशंकर परसाईं हिंदी साहित्य और हिंदी साहित्य की व्यंग्य विधा का ऐसा नाम है जिसके नाम से ही व्यंग्य का अनुभव होने लगता है। व्यंग्य विधा जितनी सहज और द्रुत प्रभावी है असल में उसका सृजन करना और व्यक्त करना उतना ही कठिन है या यों कहें कि तलवार की धार पर चलने जैसा है क्योंकि इसमें बहक जाने का खतरा अधिक होता है।

व्यंग्य से तात्पर्य किसी ऐसे कथन से है जो साधारण अर्थ से जुड़े हुऐ किसी विशेष अर्थ को भी व्यक्त करता हो और प्रभावपूर्ण हो; सुनने वाला एकदम से उसके अर्थ के प्रति उत्सुकतापूर्ण जिज्ञासा से भर उठे और अर्थ समझने पर आनंदित भी हो। व्यंग्य एक सकारात्मक कथन है इसका उद्देश्य किसी विसंगति, कमी, सार्वजनिक और सार्वभौमिक मूल्यों, जीवन व्यवस्था के आधारभूत सिद्धांतों के अवमूल्यन, अव्यवस्थापन को अपनी प्रखर बुद्धि से पहचानकर उसे दूर करके पुनः सभी के कल्याण की व्यवस्था को निर्मित करना होता है। चूंकि हर व्यक्ति व्यंग्यकार की तरह विचारक नहीं होता है अतः इतनी आसानी से मूल भाव नहीं समझ सकता है अतः व्यंग्यकार को बात को घुमाकर प्रस्तुत करना होता है इसलिये कुशल व्यंग्यकार पहले माहौल या भूमिका को हल्का बनाता है; तनाव रहित अथवा प्रसन्नता उत्पन्न करता है;ताकि पाठक या श्रोता नकारात्मक प्रतिक्रिया न दे पाये और बहुत आसानी से विसंगति का अहसास भी करा दिया जाता है। सामान्यतः समाज में व्यंग्य को हंसी मजाक के रूप में लिया जाता है किंतु वास्तव में व्यंग्य बात कहने का सबसे प्रभावी साधन है।

स्वयं हरिशंकर परसाईं जी मानते हैं कि हास्य व्यंग्य उसे कहते हैं जो हास्य से प्रारंभ होकर किसी विसंगति के प्रति पाठकों को संवेदित करते हुए एक निस्पंदन उत्पन्न कर जाता है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है कि किसी हास्य पूर्ण कथन के बाद एक शून्यता उत्पन्न होती है, यह ''अब क्या'' और ''आगे क्या'' का खालीपन भरने के लिये उत्पन्न रिक्त स्थान में किसी विसंगति को व्यक्त किया जाता है तो उससे उत्पन्न संवेदना स्थाई प्रभाव रखने वाली और सीधे अपने लक्ष्य तक पहुंचने वाली होती है।

व्यंग्य के इतने अर्थपूर्ण स्वरूप को पूर्णता प्रदान करने वालों में हरिशंकर परसाईं जी प्रथम स्थान रखते हैं। कोई भी सफल व्यंग्यकार किसी एक मुख्य विषय को लेकर अपनी रचनाधर्मिता दर्शाता है किंतु परसाईं जी की व्यंग्य चेतना कहीं विशाल है। वे विषय या शीर्षक को ही केंद्र में नहीं रखते अपितु उनके लिखे गये किसी भी निबंध में उनका व्यंग्यात्मक चरित्र ही प्रस्तुत होता है। उसमें प्रयुक्त प्रत्येक वाक्य या कथन व्यंग्य से परिपूर्ण रहता है। जहां एक ही विषय से संबंधित कई व्यंग्योक्तियां निबंध में रखी जाती हैं वहां उस निबंध की प्रसिद्धि अधिक होती है अथवा उसी की प्रधानता होती है किंतु जब किसी गद्य अथवा निबंध में प्रयुक्त व्यंग्योक्तियां उस विषय से संबंधित विसंगति के साथ साथ लेखक की व्यंग्यात्मक चेतना को अधिक प्रस्तुत करे तब वह निबंध या गद्य ही व्यंग्य बन कर नहीं रह जाता बल्कि उसमें प्रस्तुत व्यंग्योक्तियां पृथक रूप से एक स्वतंत्र व्यंग्य बन जाती है और यह कला ही एक व्यंग्यकार को सर्वश्रेष्ठ बनाती है अर्थात् जब किसी व्यंग्यकार द्वारा अपने लिखे गद्य में प्रत्येक पंक्ति में ही चुटीले आशुप्रभावी व्यंग्य कथन प्रस्तुत किये जाये तब वह व्यंग्य से ज्यादा व्यंग्यकार की सफलता अधिक दर्शाता है और व्यंग्य लेखक की आत्मा में घुल मिल जाता है तभी व्यंग्य और व्यंग्यकार एक ही पहचान को प्राप्त कर लेते है।

परसाईं जी इसी प्रकार के व्यंग्यकार हैं जहां व्यंग्य के नाम पर उनका ही नाम पहले ध्यान में आता है। उनके व्यंग्यों में न सिर्फ उस शीर्षक बल्कि उससे संबंधित सभी प्रसंगों के लिये व्यंग्य छिपा रहता है। बारात की बापसी व्यंग्य में उन्होंने शादी को भी व्यंग्य का निशाना बनाया है जब वे कहते हैं कि–

1''उनका यह शोध है कि महाभारत का युद्ध न होता यदि भीष्म की शादी हो गई होती और अगर कृष्ण मेनन की शादी हो गई होती तो चीन हमला न करता । सारे युद्ध प्रौढ़ कुंवारों के अहं की तुष्टि के लिये होते हैं।''[1]

इसीलिये वे बारात आदि से बचते हैं क्योंकि प्रौढ़ कुंवारों को विधवाओं की तरह ही इनमें जाने से बचना चाहिये

क्या पता कौन उन्हें अमंगल का सूचक मान ले। इसी के अंतर्गत बारात ले जा रही पुरानी जर्जर बस का जो हास्य रूपक परसाईं जी ने रचा है वह लाजबाब है।

2'' बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुजर रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था।..................आठ दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गये। यह समझ न आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।...........एकाएक फिर बस रूकी। क्षीण चांदनी में वृक्षों की छाया के नीचे बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि इस बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करना पड़ेगी।................धीरे धीरे वृद्धा की आंखों की ज्योति जाने लगी। चांदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती— निकल जाओ बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही''[2]

विकलांग श्रद्धा का दौर निबंध में वे सिर्फ श्रद्धा की विसंगति को ही उजागर नहीं करते बल्कि उसके माध्यम से श्रद्धेय की विसंगति को भी दर्शाते हैं—

3'' मैं बड़ी तेजी से श्रद्धेय हो रहा हूं जैसे कोई चलतू औरत शादी के बाद बड़ी फुर्ती से पतिव्रता होने लगती है।........... ....वैसे चरण छूना अश्लील कृत्य की तरह अकेले में ही किया जाता है।''[3] श्रद्धा व्यक्त करकर ही पी.एच.डी. करने वालों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि —

4'' डाक्टरेट अध्ययन से नहीं आचार्य कृपा से मिलती है। आचार्यों की कृपा से इतने डाक्टर हो गये हैं कि बच्चे खेल खेल में पत्थर फेंकते हैं तो किसी डाक्टर को लगता है। एक बार चौराहे पर यहां पथराव हो गया। पांच घायल अस्पताल में भर्ती हुए और वे पांचों हिंदी के डॉक्टर थे। नर्स अपने अस्पताल के डाक्टर को पुकारती—डाक्टर साहब तो बोल पड़ते थे ये हिंदी के डाक्टर।''[4]

तख्त अर्थात् सत्ता पर बैठे दुष्ट व्यक्ति को स्वतः श्रद्धा मिल जाती है क्योंकि— 5''तख्त ऐसा पवित्र आसन है कि उस पर लेटे हुए दुरात्मा के भी चरण छूने की प्रेरणा होती है।''[5] वास्तव में श्रद्धेय बनना नाकारा हो जाना है इसीलिये परसाईं जी का मानना है कि 6'' श्रद्धेय बनने का मतलब है 'नान परसन' (अव्यक्ति) हो जाना। श्रद्धेय वह होता है जो चीजों को हो जाने दे। किसी चीज का विरोध न करे।........ ....मुझे लगता है ,लोग मुझसे कह रहे हैं— तुम अब कोने में बैठो। तुम दयनीय हो। तुम्हारे लिये सब कुछ हो जाया करेगा''[6]

यह परसाईं जी की ही कुशल दृष्टि का नमूना है कि उन्होंने निंदा नामक विटामिन को खोज डाला और उस विटामिन के फायदे भी गिना दिये—

7''निंदा में विटामिन और प्रोटीन होते हैं। निंदा खून साफ करती है,पाचन क्रिया ठीक करती है, बल और स्फूर्ति देती है। निंदा से मांसपेशियां पुष्ट होती हैं। निंदा पायरिया का तो शर्तिया इलाज है। संतों को परनिंदा की मनाही होती है इसीलिये वे स्वनिंदा करके स्वास्थ्य अच्छा रखते हैं।''[7]

सरकारी कर्मचारी के लिये घूस कितना महत्व रखती है यह परसाईं जी बखूबी जानते हैं— 8''मेरी कामना अकसर उल्टी हो जाती हैं। पिछले साल एक कर्मचारी के लिये मैंने सुख की कामना की थी , नतीजा यह हुआ कि वह घूस खाने लगा। उसे मेरी इच्छा पूरी करनी थी और घूस खाये बिना कोई सरकारी कर्मचारी सुखी नहीं हो सकता।''[8]

और मुनाफाखोरों को करने से कीमतें बढ़ जाती है यह अर्थशास्त्र भी वे जानते हैं—

9''वह कौनसा आर्थिक नियम है कि ज्यों ज्यों व्यापारी गिरफतार होते गऐ, त्यों त्यों कीमतें बढ़ती गईं मुझे तो ऐसा लगता है ,मुनाफाखोर को गिरफतार करना एक पाप है। इसी पाप के कारण कीमतें बढ़ीं।''[9]

इन उदाहरणों से समझा जा सकता है कि परसाईंजी की व्यंग्य कला औरों से हटकर हैं जहां वे हास्य रूपकों का निर्माण करते हैं, श्रद्धा और आस्था जैसे गंभीर विषयों की विसंगतियों को उजागर करते हैं और न किये जाने योग्य किंतु सबसे अधिक किये जाने वाले कार्य जैसे निंदा को भी लाभकारी बताकर चोट करना उनकी विशेषता है। व्यंग्य के अंदर शीर्षक से संबंधित व्यंग्यों के साथ उनकी विशिष्ट व्यंग्योक्तियों के माध्यम से वे व्यंग्यकार के मन में विसंगति से उत्पन्न पीड़ा भी व्यक्त करते हैं। कुछ व्यंग्योक्तियों के माध्यम से इसे समझा जा सकता है—

''इस देश के बुद्धिजीवी शेर हैं पर वे सियारों की बारात में बैंड बजाते हैं।''

''जो कौम भूखी मारे जाने पर सिनेमा में जाकर बैठ जाये,वह अपने दिन कैसे बदलेगी।''

''अच्छी आत्मा फोल्डिंग कुर्सी की तरह होना चाहिये,जरूरत पड़ी तब फैलाकर बैठ गये नहीं तो मोड़कर कोने से टिका दिया।''

''अमरीकी शासक हमले को सभ्यता का प्रसार कहते है,बम बरसते हैं तो मरने वाले सोचते हैं सभ्यता बरस रही है।''
''जो पानी छानकर पीते हैं वो आदमी का खून बिना छना पी जाते हैं।'' '' बेइज्जती में अगर दूसरे को भी शामिल कर लो तो आधी इज्जत बच जाती है।'' '' कैसी अद्भुत एकता है। पंजाब का गेंहू गुजरात के कालाबाजार में बिकता है और मध यप्रदेश का चावल कलकत्ता के मुनाफाखोर के गोदाम में भरा है। देश एक है।''

इन पंक्तियों में हम देख सकते हैं कि किसी विषय पर व्यंग्य लिखते समय परसाईं जी विषय की विसंगति से अधिक अपनी व्यंग्य चेतना से संचालित होते हैं। व्यंग्य के बारे में समालोचकों की धारणा से अलग परसाईं जी ने व्यंग्य को हास्य के दायरों से बाहर निकाला है और स्वयं ही उस पर प्रश्न करके व्यंग्य की समीक्षा भी की है। व्यंग्य के बारे में उनका अपना एक नजरिया है।

एक व्यंग्यकार को सभी प्रकार की प्रतिक्रियायें झेलना पड़ती हैं जबकि वह गंभीर लेखक के समान ही साहित्यिक जिम्मेदारी को निभाता है किंतु आलोचक उसे हल्के में लेना चाहते हैं इसी को परसाईं जी दर्शाते हैं कि–10''व्यंग्य लिखने वालों की ट्रेजिडी कोई एक नहीं है। फनी से लेकर मनुष्यता की भावना से हीन तक समझा जाता है। 'मजा आ गया' से लेकर 'गंभीर हो जाओ' तक की प्रतिक्रियायें उसे सुनना पड़ती हैं।''[10]

परंतु व्यंग्य अपने आप में काफी गंभीर विधा है। परसाईं जी कहते हैं कि–

11'' व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है,जीवन की आलोचना करता है,विसंगतियों, मिथ्याचारो और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।..... जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा रहती है जितनी गंभी रचनाकार की बल्कि ज्यादा ही, वह जीवन के प्रति दायित्व का अनुभव करता है।''[11]

ज्ब आलोचक व्यंग्यकार को निराशावादी या हर चीज में कमी देखने वाला कहता है तब परसाईं जी उत्तर देते हैं कि–[12]''यह कहना तो इसी तरह हुआ कि डाक्टर से कहा जाये कि तुम रूग्ण मनोवृत्ति के आदमी हो, तुम्हे रोग ही रोग दीखते हैं।''[12] व्यंग्यकार को हर चीज में बुराई देखने की आदत नहीं होती और न ही वह हंसी मजाक के लिये अपने विचार रखता है। एक व्यंग्यकार गंभीर रचनाकार से अधिक साहसी होता है क्योंकि वह विसंगति के कारक की सच्चाई उजागर करने से डरता नहीं है। विसंगति के प्रति इस नजरिये से निश्चित् है कि आलोचकों की दृष्टि में रचना सर्वमान्य नहीं हो सकती है अतः व्यंग्य के प्रति हल्की दृष्टि रखना अनुचित है क्योंकि विसंगति के प्रति व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति में हास्य या विनोद तो स्वाभाविक है ही किंतु उसके पीछे रचनाकार का नजरिया मनोरंजन मात्र नहीं होता है अपितु वह अधिक प्रभावी रूप से पाठकों के मन को झकझोरता है। परसाईं जी की व्यंग्य चेतना इसी प्रकार की है। समीक्षकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है–''हरिशंकर परसाई जी के लेखन के बारे में कहा जा सकता है कि स्वातंत्रयोत्तर काल का इतिहास गुम हो जाए तो परसाई जी की रचनाओं के आधार पर उसे फिर से लिखा जा सकता हैं परसाई जी ने व्यंग्य को गरिमा पूर्ण ढंग से ऊपर उठाया और तीखा एवं धारदार बनाया। यह उनकी विशेषता है कि वे जहां चोट करना चाहते

हैं, वहीं चोट लगती है। देखने की बात यह है कि परसाई का व्यंग्य केवल भाषागत नहीं है, बल्कि जीवन प्रसंग के चित्रण से व्यंग्य उभरता है। ''[13] उनकी इसी चेतना के आधार पर उन्हें सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1–बारात की बापसी–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
2. बारात की बापसी–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
3. विकलांग श्रद्धा का दौर–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
4. विकलांग श्रद्धा का दौर–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
5. विकलांग श्रद्धा का दौर–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
6. विकलांग श्रद्धा का दौर–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
7. वह जो आदमी है न–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
8. नया साल–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
9. नया साल–(व्यंग्य)–हरिशंकर परसाईं।
10–भूमिका–सदाचार की वापसी;–(व्यंग्य संग्रह)हरिशंकर परसाईं।
11. भूमिका–सदाचार की वापसी;–(व्यंग्य संग्रह)हरिशंकर परसाईं।
12. भूमिका–सदाचार की वापसी;–(व्यंग्य संग्रह)हरिशंकर परसाईं।
13. भूमिका– श्रेष्ठ हिंदी कहानियां(1950–60) संपादक– खगेन्द्र ठाकुर पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली। प्रथम संस्करण, जनवरी, 2010